rekhta FOUNDATION

हिन्दवी

हिन्दवी उत्सव: हिंदी भाषा और साहित्य का सुनहरा उत्सव

हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण और प्रचार के लिए समर्पित रूप से काम कर रहे, रेख़्ता फ़ाउंडेशन के उपक्रम 'हिन्दवी' (Hindwi.org) ने एक ऑनलाइन कार्यक्रम 'हिन्दवी उत्सव' का आयोजन करके अपनी पहली वर्षगाँठ मनाई, जिसका आधिकारिक प्रसारण हिन्दवी के फ़ेसबुक पेज से हुआ।

'हिन्दवी उत्सव' कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे वरिष्ठ कवि-लेखक अरुण कमल ने हिन्दवी पर हिंदी भाषा के लिए हो रहे काम, एक स्थान पर विशाल दर्शकों के लिए साहित्य सामग्री की उपलब्धता और इतने कम समय में उत्कृष्ट वृद्धि की सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि hindwi.org उन कुछ वेबसाइटों में से एक है जो कविता, छंद, लोकगीत, ब्लॉग जैसे अनुभाग के साथ हिंदी साहित्य संसार के पाठकों को विविधता प्रदान करती है। साथ ही अब शब्दकोश और गद्य के साथ यह वेबसाइट और विविध हो जाएगी। उन्होंने कहा—"हिन्दवी आज हिंद की तूती है" और साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए हिंदी साहित्य की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए हिन्दवी को गर्व से अग्रणी बताया।

हिन्दवी उत्सव के ख़ास मौक़े पर हिन्दवी के नए अनुभाग गद्य-संसार के लोकार्पण के पहले साहित्यकार असग़र वजाहत और योगेंद्र आहूजा के साथ 'गाथा, कथा, कहानी' विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई और इसका संचालन सैयद मोहम्मद इरफ़ान ने किया। परिचर्चा में हिंदी कहानी के उद्भव और उसके शुरुआती विकास से जुड़ी कुछ अहम बातों, उसके उत्साह, प्रारंभिक विकास और वर्तमान स्थिति पर चर्चा हुई।

असग़र वजाहत ने कहा, "प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को एक रूप दिया... प्रेमचंद ने कहानी का पूरा ढाँचा वेस्ट से लिया। पश्चिमी कहानी में जिस प्रकार कथानक, पात्र, कथोपकथन, वातावरण, चरम-उत्कर्ष और क्लामेक्स जितने भी तत्व थे पश्चिम की कहानी के उनको लेकर उन्होंने हिंदी कहानी लिखी और हिंदी में जो मौखिक परंपरा की कहानी थी, उन मौखिक परंपरा कहानियों में ये तत्व नहीं थे उन तत्वों को समझा गया कि वह आधुनिक कहानी में फ़िट नहीं बैठेंगें।" उन्होंने उल्लेख किया कि लेखन के विकास के साथ, भारतीय संस्कृति के

पारंपरिक लेखन का प्रतीक, जो बहु-आयामी रहा है, एकल आयाम बन गया। हालाँकि, उन्होंने माना कि कहानी लेखन की परिभाषा स्थिर नहीं रह सकती है और समय के साथ व्यापक विस्तार देखा जा रहा है। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि आपातकाल के समय जैसे कई अवसरों पर, लेखकों ने कहानी लेखन की पारंपरिक शैली से प्रेरणा ली, जिसमें गंभीर मुद्दों को काल्पनिक रूप में उजागर किया गया था। उन्होंने भारतीय साहित्यिक लेखन की पहचान को बनाए रखने के लिए पारंपरिक और आधुनिक लेखन के जोड़ को बनाए रखने का आग्रह किया।

साथ ही साथ उन्होंने इस बात पर भी ग़ौर कराया कि हिंदी कथा साहित्य कई दिशाओं में आगे बढ़ रहा है, लेखन स्थानीय भाषाओं के मेल से विविध हो रहा है। कई लेखक अब अन्य राज्यों और देशों की वास्तविकताओं और मुद्दों पर लिख रहे हैं, जिसने पाठकों में कहानी को लेकर रुचि पैदा हुई है।

साहित्यकार योगेंद्र आहूजा ने भी इस विषय पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि माधवराव सप्रे ने 1900 के दशक में 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी लिखी जो खड़ी बोली की पहली कहानी है, यही समय आधुनिक हिंदी कहानी की अवधारणा की शुरुआत है। उसके बाद वर्ष 1903 में रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' और फिर 1907 में 'बंग महिला' नाम से विख्यात राजेंद्र बाला घोष की कहानी ‘दुलाईवाली’ यह सभी कहानियाँ आधुनिक हिंदी कहानी का आरंभ बिंदु हैं। आधुनिक और पारंपरिक कहानी लेखन पर अपनी राय व्यक्त करते हुए उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि दोनों तरह के लेखन का अपना महत्व है क्योंकि पारंपरिक कहानियों के उद्देश्य अलग-अलग थे, वे कहानियाँ नैतिक शिक्षा पर केंद्रित थे और आधुनिक कहानी का उद्देश्य वर्तमान के प्रश्नों और मुद्दों से जूझना था।

योगेंद्र आहूजा ने आगे कहा कि हालांकि प्रिंटिंग प्रेस ने पारंपरिक कहानी कहने पर सीमाएँ ज़रूर लगाईं, लेकिन दुनिया भर के नए लेखकों को वैश्विक पाठकों तक पहुँचने में भी उसके योगदान को भूलना नहीं चाहिए।

इस परिचर्चा के बाद हिन्दवी के नए अनुभाग गद्य-संसार का शुभारंभ किया गया। साथ ही हिन्दवी के आधिकारिक यूट्यूब चैनल को हिंदी साहित्य संसार के दर्शकों के लिए लाइव कर दिया गया।

हिन्दवी उत्सव के इस अवसर पर हिंदी जगत से जुड़े कई प्रमुख कलाकारों ने हिन्दवी का उत्साह बढ़ाया। अभिनेता मनोज बाजपेयी, अभिनेता गजराज राव, लेखक-कलाकार वरुण ग्रोवर, अभिनेता राजेंद्र गुप्ता, शैलेश भारतवासी—संस्थापक, हिंद-युग और लेखिका प्रत्यक्षा की ओर से हिन्दवी को पहली वर्षगाँठ पर शुभकामनाएँ भेजीं गईं।

हिन्दवी उत्सव के सफल कार्यक्रम का समापन 'राहगीर' के संगीत सत्र के साथ हुआ। उन्होंने अपनी प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी संगीतमय प्रस्तुति में नागार्जुन की कविता ‘अकाल और उसके बाद’, गोरख पांडेय की कविताएँ ‘समय का पहिया’, ‘उनका डर’, रमाशंकर यादव ‘विद्रोही’ की कविता ‘नई दुनिया’ जैसी चर्चित और महत्त्वपूर्ण रचनाएँ थी। साथ ही उन्होंने ख़ुद की कविताएँ ‘क्या जयपुर क्या दिल्ली’ और ‘अलसी दोपहर’ भी सुंदर ढंग से पेश की।

रेख़्ता फ़ाउंडेशन के महाप्रबंधक, धर्मेंद्र साह कहते हैं, “‘हिन्दवी’(www.Hindwi.org) की कोशिश है कि भविष्य में वह हिन्दी-साहित्य-संसार का सबसे बड़ा डिजिटल संग्रहालय बने, जैसा हम उर्दू के लिए (www.rekhta.org) रेख़्ता में लगातार कर रहे हैं। हमारी वेबसाइट पर कविता और गद्य का विशाल संग्रह, विभिन्न विषयों पर ब्लॉग, लेख इत्यादि उपलब्ध हैं।”

For more information, please contact Preeti Gaur | 98739-65379 | preeti.gaur@rekhta.org